सर्व के सहयोग से सुखमय संसार की स्थापना

पूरा संसार एक परिवार है। संसार में जितने भी लोग है वे सब परमात्मा की संतान है। प्रकृति, पुरूष तथा सृष्टि चक्र का ईश्वर के संविधान द्वारा निर्मित किया गया अटल सत्य नियम है। यह संसार एक खेल है और सभी मनुष्य अपने-अपने पार्ट को अच्छी तरह से खेल रहे हैं। इस सृष्टि चक्र की सुन्दर कहानी है। उत्थान के बाद पतन और पतन के उत्थान, रात के बाद सुबह होना अवश्यंभावी है। सृष्टि चक्र के प्रारम्भ में परमात्मा एक नये, सुन्दर, सतोप्रधान तथा दिव्य दुनियां का निर्माण कर मनुष्यात्माओं को उसके योग्य बनाकर सतोप्रधान दुनियां में भेज देता है। मनुष्यात्मायें अपने खेल को खेलते-खेलते अपनी वास्तविकता को भूल जाती है और वहीं से प्रारम्भ होती है पतन की कहानी। मानवीय मूल्यों से विमुख होते मानव को पुन: उस मार्ग पर लाने तथा वैसी ही दिव्य दुनियां के निर्माण की खोज में अनेक धर्मों व पंथों की स्थापना होती है। अध्यात्म रूप से सशक्त आत्मायें ही इसका निर्माण करती है उनका भी मकसद केवल शान्ति और सुखमय दुनियां की स्थापना होती है।

ऐसा नहीं है कि महात्माओं के द्वारा स्थापित धर्म और पंथ मनुष्य को मनुष्यता से भटकाने के लिए होते है। वरन एक सूत्र में बांधना, वसुधैव कुटुम्बकम की स्थापना करना ही उनका मुख्य ध्येय होता है। वे परमात्मा के दूत अथवा सच्चे सपूत के रूप में कार्य करने की कोशिश करते हैं। परन्तु अनुकरण करने वालों की अवस्थायें भिन्न-भिन्न होती हैं। जिसकी जितनी क्षमता होती है सिर्फ वह उतना ही उसको ग्रहण कर पाता है। कई बार तो ऐसा होता है कि मनुष्य उसके सार्वभौमिक मिशन से हटकर एक सीमित दायरे में बंध जाता है और वहीं से प्रारम्भ होता है धर्मों के बीच मतभेद। यदि गहराई से देखा जाये तो सभी धर्मों का केवल एक ही संदेश ईश्वर को प्राप्त करना, एक साथ मिलकर रहना और एक श्रेष्ठचारी दुनियां की स्थापना करना होता है।

सभी धर्मों और पंथ के लोगों को धर्म के दायरे को तोड़ते हुए आध्यात्मिकता को अपनाना होगा। क्योंकि धर्मों का मूल लक्ष्य भी तो आध्यात्मिकता को बढ़ावा देना है। गीता, रामायण, कुरान, बाईबिल, गुरू ग्रंथ साहिब में सिर्फ आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाने के लिए उपदेश दिये गये हैं। जाति, धर्म, रंग भेद, भाषा भेद तथा किसी भी सामाजिक बुराई की व्याख्या कतई नहीं की गयी है। धर्म तो केवल दैहिक बनाये गये है। वास्तव में धर्म की आध्यात्मिक व्याख्या धारणाओं से सम्बन्धित है। अध्यात्मिक शक्ति मनुष्य के देहभान को तोड़कर बुराईयों से मुक्ति दिलाता है। जब मनुष्य इस देह के आवरण को तोड़कर मनमंदिर में प्रवेश करता है तो वहाँ से दैहिक भान समाप्त होकर आत्मीयता के मंजिल पर सवार हो जाता है। सभी धर्मों के लोगों को एक मंच पर आकर आध्यात्मिक क्रान्ति का उद्घोष करने की आवश्यकता है। धर्म गुरूओं के मूल मकसद को गहराई से चिंतन कर आत्मसात करना पड़ेगा। यही एक साधन है समन्वय और सदभाव स्थापित करने का मूल मंत्र।

वैश्विक एकता की आवश्यकता: नफरत, इर्ष्या, घृणा, काम, क्रोध, लोभ और मोह से सब आत्मा के विकार हैं। यही मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु है। यही मनुष्य को अनेक वर्गों और धर्मों में विभाजित करते हैं। यदि किन्हीं दो मनुष्यों के बीच झगड़ा या मतभेद पैदा होता है तो उसका कारण केवल इन्हीं बुराईयों के इर्द-गिर्द मिलेगा। इसलिए यदि समाज में किसी भी प्रकार का मतभेद या विद्वेष पैदा होता है तो उसका मुख्य कारण मूल्यों का पतन है। सामाजिक एकता किसी भी राष्ट्र और संगठन की दिवार होती है। सामाजिक उन्नति से ही देश व समाज की उन्नति हो सकती है। मनुष्य को भौतिक सत्ता से उपर उठकर सोचने की आवश्यकता है। धन, दौलत को इकटठा करने का मकसद सिर्फ सच्ची सुख और शान्ति है। सुख शान्ति की खोज में मनुष्य भटकते-भटकते सामाजिक विद्वेष में आकर फंस जाता है। जबकि इस समस्या का निदान यह नहीं है। समाज में रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि

हमारी और दूसरों की भलाई आपसी सदभाव में हैं। जब हम दूसरों को सुख देंगे तभी हमें भी सुख प्रदान होगा। कर्मों की गुह्य गति को ध्यान में रखते हुए देखा जाये तो दु:ख देने वाले तथा दूसरों के बारे में बुरा सोचने वाले को कभी भी सुख नसीब नहीं हुआ है। जो भी लोग समाज में अपने को बुद्धिजीवी समझते हैं अथवा सामाजिक एकता में विश्वास रखते हैं उन्हें सामाजिक एकता को तोड़ने वाले को आध्यात्मिकता का सहारा लेते हुए वैश्विक एकता के तरफ प्रेरित करना चाहिए तथा उन्हें हित या अनहित का जरूर ज्ञान कराना चाहिए। सामाजिक विद्वेष का निराकरण आपसी सौहार्द्र में हैं। इसलिए हमें सद्भाव को प्रतिस्थापित करने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है।

मनुष्यता का धर्म आतंक नहीं: संसार में सबसे बुद्धिजीवी प्राणी मनुष्य है। इसे संसार में सदा श्रेष्ठ उच्च कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मनुष्य और अन्य प्राणियों में इसी आधार पर विभाजित किया गया है। हमारी संस्कृति और सभ्यता में कहीं पर हिंसा और आतंक के लिए स्थान नहीं दिया गया है। हिंसा और आतंक करना तो असुरों का कार्य था। यदि हिंसा करना ही है तो अपने अन्दर छिपे दुश्मन पांच विकारों की किजिए। इस हिंसा से दूसरों को दुख नहीं बल्कि सुख मिलेगा। हम स्वयं भी सुखी रहेंगे और दूसरों को भी सुख प्रदान करेंगे। किसी भी धर्म और मजहब में हिंसा और आतंक का पाठ नहीं पढ़ाया गया है। आतंक और हिंसा मनुष्य नहीं कर सकता। पाशविक वृत्ति तथा आसुरी वृत्ति वाले ही करते हैं उन्हें कत्तई मनुष्य का दर्जा नहीं दिया जा सकता। जो अपनों का खून करें, मानवीयता को कूचले वह वास्तव में मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है। इसलिए हमारा सुन्दर भविष्य और सुख आपसी भाईचारें और सदभाव में है न कि आपसी भेदभाव और हिंसा में। इसलिए ईश्वर के नियमों का पालन करते हुए हमें शान्ति और सहयोग का रास्ता अपनाना चाहिए यही सभ्य और शान्तिमय समाज की स्थापना का मूल मंत्र हैं।

मानसिक शान्ति प्राप्त करने का साधन अन्तर्जगत की यात्रा: मनुष्य के सदाबहार और सुन्दर जीवन के लिए भौतिक वस्तुओं का विकास जरूरी है। परन्तु केवल इसका उपयोग किया जाये। भौतिक वस्तुएं ही हमारी सबकुछ नहीं है, उसके अधीन नहीं बने। जरा गौर करें भौतिक वस्तुएं भी तो हमारी ही खोज हैं। केवल एक साधन के रूप में इसका उपयोग करना चाहिए परन्तु साधना को छोड़ना नहीं चाहिए। साइंस और साईलेन्स एक दूसरे के पूरक है। साईलेन्स से ही साइंस का उदभव हुआ है। कहते है एक चुप सौ सुख। अर्थात जितना हम अन्तर्जगत की यात्रा करने का प्रयास करेंगे उतना हमें आन्तरिक सुख प्राप्त होता रहेगा। सच्चा सुख और शान्ति तो केवल शान्ति और सुख के सागर परमात्मा शिव के पास जाने से ही मिलेगी। जिस तरह से सूर्य के समक्ष जाने से गर्मी का एहसास होता है उसी प्रकार ज्ञान सूर्य परमात्मा के समीप जाने से आध्यात्मिक शक्ति और सकारात्मक ऊर्जा की प्राप्ति का एहसास होता है। इससे मनुष्य का जीवन सफल और खुशहाल बनता है। भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति ही सच्चे सुख और शान्ति का साधन है।

मानवीय मूल्यों की स्थापना में ब्रह्माकुमारीज संस्था का अथक प्रयास:आज संसार में जितनी भी विसंगतियां पनप रहीं है इसका मूल कारण मानवीय मूल्यों का पतन है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मानवीय मूल्यों की स्थापना कर एक नये समाज की संकल्पना के साथ कार्य कर रहा है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना सन् 1937 में हैदराबाद सिंध (जो अभी पाकिस्तान में है) में स्वयं परमपिता परमात्मा शिव के निर्देशन में प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा हुई। माताओं बहनों को आगे रखकर भारत माता की जय और वन्देमातरम की उपाधि का सम्मान करते हुए प्रजापिता ब्रह्मा ने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद परमात्मा के निर्देशन में यह संस्था राजस्थान के पर्वतीय स्थल माउण्ट आबू में आयी। यही से मनुष्यों में मानवीय मूल्यों के समावेश कर नया जीवन प्रदान करने तथा एक नवीन समाज की स्थापना का कारवां प्रारम्भ हुआ। मनुष्य के मूल कर्त्तव्य क्या है, वह कैसे ईश्वरीय और आध्यात्मिक शक्तियों के सहारे अपने

को श्रेष्ठ देव तुल्य बना सकता है, यही इस संस्था का मिशन है। बुराईयों पर विजय प्राप्त कर दैवी गुणों को आत्मसात् करने के लिए भारत के प्राचीन राजयोग ध्यान पद्धति के द्वारा आध्यात्मिक शक्तियों को अपनाने का अमूल शस्त्र माना। धीरे-धीरे यह संस्था भारत तथा विश्व के 130 देशों में फैल गयी। आज पूरे विश्व के 130 देशों में अपने आठ हजार सेवाकेन्द्रों के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की शिक्षा द्वारा लोगों के जीवन में परिवर्तन करने का महान कार्य कर रही है। धर्म, जाति, रंग भेद, भाषा भेद से उपर उठते हुए देवी देवता धर्म की स्थापना का लक्ष्य सामने रखते हुए आत्मीयता का पाठ पढ़ाकर दैहिक रिश्तों से उपर उठाकर एकता के सूत्र में बांधने तथा वसुधैव कुटुम्बकम की स्थापना करने का महान कार्य कर रही है।

यह विश्व की पहली ऐसी संस्था है जिसके केन्द्रों की संचालन स्वयं महिलायें करती है। वर्तमान में इस संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी है। 93 वर्ष की आयु होते हुए भी वे पूरी दक्षता और सफलता के साथ इस संस्था का संचालन कर रही है। इसके पहले विदेशों में जाकर उन्होंने भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों को पल्लवित करने का महान कार्य किया। सन् 2007 में संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के देहावसान के बाद इस संस्था की मुख्य प्रशासिका बनी। इस संस्था में नौ लाख से भी ज्यादा लोग पूर्ण रूप से अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाते हुए मानवीय सेवाओं में संलग्न है। इस संस्था में ईश्वरीय सेवाओं अर्थ भाई-बहनों का एक विशाल समूह संस्था में समर्पित है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के अन्तर्गत 18 प्रभाग बनाये गये है। जिसके तहत प्रशासक, शिक्षा, मेडिकल, मीडिया, राजनीतिज्ञ, ग्रम विकास, न्यायविद, समाज सेवा, वैज्ञानिक एवं अभियन्ता, सुरक्षा, धार्मिक प्रभाग, ट्रांसपोर्ट एवं ट्रवेल्स, महिला, युवा, खेलकूद, कला एवं संस्कृति, एअरशीप एवं स्पार्क आदि प्रभागों का निर्माण किया गया है। जिसके अन्तर्गत जुड़े लोगों को संस्था के मुख्यालय तथा भारत के विभिन्न स्थानों पर आमंत्रित कर सैकड़ो सेमिनार, सम्मेलनों, समूह डॉयलागों, कार्यशालाओं, प्रदर्शनी, मेला का आदि का आयोजन कर आध्यात्मिक प्रज्ञा के सहारे मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रयास किये जाते हैं। ग्राम विकास तथा चिकित्सा प्रभाग द्वार प्रत्येक गाँवों में जाकर लोगों को नशामुक्ति, स्वच्छता, शिक्षा तथा स्वस्थ जीवन प्रणाली के लिए बड़े-बड़े अभियानों द्वारा लोगों को प्रशिक्षित करने का महान कार्य करते है।

वैसे भी परमात्मा के निर्देशन अनुसार यह युग परिवर्तन का समय चल रहा है। मनुष्य स्वयं अपने विनाश की सारी सुविधायें तैयार कर चुका है, आतंकी गतिविधियों से लोग भयभीत है। ऐसे परमात्मा अवतरित होकर आने वाली नयी सतयुगी दुनियां की स्थापना का कार्य करा रहे हैं जिसके तहत यह संचालित है। इसलिए सभी मनुष्यात्माओं से इस संस्था की अपील है कि वे अपने जीवन को सुखशान्ति मय बनाकर नये परमात्मा द्वारा संचालित इस महायज्ञ में सहयोगी बने।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com